प्रो॰ डॉ॰ लाल केश्वर सिंह
अध्यक्ष, हिन्दी-विभाग, 21.4.2020
कि॰ सि॰ म॰ महाविद्यालय, औरंगाबाद (बिहार) बी॰ए॰ पार्ट-1

विषय: जयशंकर प्रसाद के चन्द्रगुप्त नाटक का वर्णन करें।

'चन्द्रगुप्त' जयशंकर प्रसाद जी की प्रौढ़ नाट्य कृति है। इसका प्रकाशन सन् 1931 ई॰ में हुआ था। तक्षशिला विश्वविद्यालय के आचार्य चाणक्य एवं उनके स्नातक मित्र मगध चन्द्रगुप्त और मालव सिंहरण; सिकन्दर के भारत पर तत्कालीन आक्रमण की योजना को विफल करने के लिए प्रयत्नशील होते हैं। गांधार लौटी, कायर राजकुमार आम्भीक क्षुद्र स्वार्थ से परिचालित होकर सिकन्दर का सहयोगी बनता है, किन्तु उसकी बहन अलका राष्ट्रीय भावना से प्रेरित होकर सिंहरण आदि देश भक्तों का साथ देती है। चाणक्य, चन्द्रगुप्त, सिंहरण, अलका आदि के प्रयास से आम्भीक का षड्यंत्र विफल होता है और साम्राज्य लोलुप सिकन्दर को भी निराश होना पड़ता है। पुनः उनके प्रयत्न से मगध के विलासी एवं अत्याचारी शासक नन्द का अन्त होता है तथा चन्द्रगुप्त वहाँ का शासक बनाया जाता है। बाद में सिल्यूकस मगध साम्राज्य पर आक्रमण करता है; किन्तु चन्द्रगुप्त द्वारा पराजित किया जाता है। इस तरह चन्द्रगुप्त भारत का निष्कंटक सम्राट बन जाता है। सिल्यूकस अपनी पुत्री कार्नेलिया का परिणय चन्द्रगुप्त के साथ कर के उससे स्थायी मित्रता कर लेता है।

'चन्द्रगुप्त' प्रसाद जी का ऐतिहासिक नाटक है। यह नाटक चार अंकों का है। प्रथम दृश्य में तक्षशिला

के गुरुकुल में चाणक्य, सिंहरण, आम्भीक, अलका और चन्द्रगुप्त के माध्यम से संपूर्ण वस्तु-स्थिति का बोध करा दिया गया है। दूसरे दृश्य में मगध सम्राट नन्द वसन्तोत्सव में राक्षस की प्रेयसी सुवासिनी की ओर आकर्षित होते हैं तथा राक्षस की अभिनय कला से प्रसन्न होकर राजा उसे अमात्य वर्ग में नियुक्त कर देते हैं। चन्द्रगुप्त मगध की राजकुमारी कल्याणी को चीते से रक्षा करता है तथा कल्याणी चन्द्रगुप्त के ऊपर आसक्त हो जाती है। चाणक्य नन्द की सभा में अपमानित होता है। तथा यह प्रतिज्ञा करता है कि नन्द का विनाश करने ~~का~~ के बाद ही शिखा बांधेंगे। इसी अंक में चन्द्रगुप्त निर्वासित किया जाता है तथा चाणक्य को बन्दीगृह से छुड़ाता है। दाण्ड्यायन सिकन्दर को सुबुद्धि का आशीर्वाद देता है तथा चन्द्रगुप्त को भारत का भावी सम्राट घोषित करता है।

तृतीय अंक का केन्द्र मगध है। सभी स्थितियाँ मगध पर ही केन्द्रित होती हैं। चाणक्य की कूटनीति का शिकार पहले राक्षस होता है और सुवासिनी के साथ नन्द का कोपभाजन बनता है तथा पर्वतेश्वर चाणक्य के महत्व को स्वीकार करता है और चाणक्य का अनुगामी बन जाता है। कार्नेलिया के प्रणय-प्रसंग को लेकर चन्द्रगुप्त और फिलिप्स में द्वन्द्व युद्ध होता है। फिलिप्स मृत्यु को प्राप्त है। नन्द शकटार के हाथों मारा जाता है तथा चन्द्रगुप्त सिंहासनारूढ़ होता है।

चतुर्थ अंक में कल्याणी पर्वतेश्वर की हत्या करने के बाद आत्म हत्या कर लेती है। चाणक्य के प्रभाव से आम्भीक का हृदय परिवर्तन होता है तथा सिल्यूकस के साथ युद्ध करते हुए आम्भीक वीरगति को प्राप्त होता है। पंचनद के युद्ध में चन्द्रगुप्त की विजय होती है। वह सिल्यूकस को उसके शिविर में सम्मान पूर्वक मुक्त करता है। चाणक्य अमात्य पद का त्याग करता है तथा उसके प्रस्ताव पर सिल्यूकस की सहमति से कार्नेलिया और चन्द्रगुप्त का विवाह संपन्न हो जाता है।

'चन्द्रगुप्त' में त्याग, कृतज्ञता, पांडित्य, उदारता सुशीलता वीरता आदि मानवोचित गुण विद्यमान हैं। चन्द्रगुप्त में कृतज्ञता का भाव भी है। वह अपने प्राण-रक्षक सिल्यूकस के प्रति सदैव कृतज्ञ है। गुरुदेव के प्रति मालविका एवं सिंहरण के प्रति भी कृतज्ञ है। उसके साथ ही उसमें न्याय का भाव भी है। इसलिए देश के परम हितैषी गुरुदेव चाणक्य की हत्या का प्रयास करनेवाले अपने पिता को भी वह मृत्युदण्ड देना चाहता है।

चन्द्रगुप्त के हृदय में राज्य की जनता के प्रति अगाध स्नेह है। वह कहता है— "मैं उन सब पीड़ित आघात जर्जर, पद-दलित लोगों का संरक्षक हूँ जो मगध की प्रजा है।" वह मगध के समस्त नागरिकों की स्वतंत्रता की घोषणा करता है। वह जनता द्वारा निर्मित परिषद के द्वारा चुना हुआ शासक है तथा आर्य चाणक्य

की सम्मति मानकर मंत्री परिषद् की सम्मति से मगध और आर्यावर्त के कल्याण में लगता है।

चाणक्य में दृढ़ता एवं आत्मविश्वास है। वह कठिन से कठिन परिस्थितियों में दृढ़ रहता है। कभी भी हिम्मत नहीं हारता। सिंहरण जब कहता है कि — "आप आज्ञा दीजिए, हम लोग कर्तव्य में लगा जाएं। विपत्तियों के बादल मंडरा रहे हैं, उसपर चाणक्य का कथन है — "चिंता नहीं। पौधे अन्धकार में बढ़ते हैं, मेरी नीतिलता उसी भांति विपत्तितम में लहलही होगी।" मगध के अत्याचारी शासन का अन्त कर उसने जनतांत्रिक शासन व्यवस्था स्थापित की, देश में शांति कायम की, विदेशी विदेशी आक्रमण का भय समाप्त किया। चाणक्य के चरित्र का एक महत्वपूर्ण गुण है, त्याग।

सिंहरण मालवा गणराज्य के राष्ट्रपति का पुत्र है। वह वीर, साहसी, उत्साही, निर्भीक तथा राष्ट्र-प्रेमी है। उसमें देश भक्ति की भावना कूट-कूट कर भरी हुई है। देश की रक्षा में उसकी सम्पूर्ण शक्ति और बुद्धि एकनिष्ठ होकर लगी हुई दिखाई पड़ती है।

नन्द मगध का निरंकुश, क्रूर और स्वेच्छाचारी सम्राट है। वह मदांध विलासी एवं उग्र स्वभाव का व्यक्ति है। उसे न उचित-अनुचित का ध्यान है और न न्याय-अन्याय का। वह अपने पिता का वध करके राजगद्दी पर बैठा था। वह एक विलासी

समाट है तथा सुरा और सुन्दरियों के बीच आनन्द प्राप्त करता है। नन्द के चरित्र का अमानवीय पक्ष उसके विरुद्ध चाणक्य द्वारा भरी सभा में लगाए गए वास्तविक अभियोगों से अनायास ही स्पष्ट हो जाता है "चाणक्य— नन्द! तुम्हारे ऊपर इतने अभियोग हैं— महापद्म की हत्या, शकटार को बन्दी करना— उसके सात पुत्रों को भूख से तड़पाकर मारना। सेनापति मौर्य की हत्या, उसकी स्त्री को और वररुचि को बन्दी बनाना। कितनी ही कुलीन कुमारियों का सतीत्व-नाश, नगर भर में व्यभिचार का स्रोत बहाना। अन्त में सुवासिनी पर अत्याचार, शकटार की एकमात्र बची हुई सन्तान, जिसे तुमने अपनी घृणित पाशवृत्ति का।" ऐसे व्यक्ति मानवता के नाम पर कलंक है।

आम्भीक तक्षशिला का युवराज है। वह उद्धत, उच्छृंखल, दुर्विनीत क्रोधी, अदूरदर्शी तथा अभिमानी है। तक्षशिला विश्वविद्यालय के अध्यापक चाणक्य को जानते हुए भी उससे अशिष्टता पूर्वक कहता है— "बोलो ब्राह्मण, मेरे राज्य में रहकर मेरे अन्न से पलकर, मेरे विरुद्ध कुचक्रों का सृजन।" ठीक इसी तरह अपनी बहन अलका के मुख से आर्यावर्त के उपकार की बातें सुनकर अपने पिता गान्धार नरेश के समक्ष ही अलका की हत्या करने की बात कहता है— "और तब अलका मैं अपने हाथों तुम्हारी हत्या करूँगा।" बाद में उसे अपनी भूल मालूम होती है। चाणक्य के प्रयास तथा अलका के स्नेह हित त्यागमय जीवन से अनुप्राणित होकर वह देश भक्ति की भावना से भर उठता है।

Scanned with CamScanner

पर्वतेश्वर पंचनद नरेश है। वीर है परन्तु उसके अहंकार विलास तथा मिथ्या क्षत्रियाभिमान का भाव भरा है। वह कहता है— "प्राच्य देश के बौद्ध और शूद्र राजा की कन्या से हम परिणय नहीं कर सकते।" वह उत्तम दर्जे का वीर है। यद्यपि उसकी सेना युद्ध भूमि से भाग खड़ी होती है, फिर भी वह प्राण-पण से युद्ध में जुटा रहता है। उसकी वीरता देखकर ही सिकन्दर उसके साथ संधि करता है। सिकन्दर ग्रीक सम्राट है। वह वीर, पराक्रमी, साहसी एवं कुशल योद्धा है। वह विश्व-विजय की तृष्णा के वशीभूत होकर एशिया के पश्चिमी खण्ड को जीतता हुआ भारत विजय करने पहुँचता है। स्पष्ट है वह महत्वाकांक्षी है। वह कूटनीति से गांधार नरेश को अपने पक्ष में मिलाकर पंचनद नरेश को पराजित करता है।

सिल्यूकस ग्रीक सम्राट सिकन्दर का सेनापति है। वह वीर, उत्साही, उदार और दृढ़ है। वह व्याघ्र से चन्द्रगुप्त के जीवन की रक्षा करता है। उसे जब यह ज्ञात होता है कि कार्नेलिया चन्द्रगुप्त के प्रति अनुरक्त है तो वह बिना किसी हिचक के कार्नेलिया का हाथ चन्द्रगुप्त के हाथ में दे देता है, इस तरह वह दो संस्कृतियों के बीच दृढ़ एकता के शुभ कार्य में भी सहायक होता है।

मौर्य सेनापति मगध साम्राज्य का सेनापति है। वह चन्द्रगुप्त का पिता है। चन्द्रगुप्त के विद्रोही हो जाने के बाद नन्द मौर्य पर यह आरोप लगाकर

कि वह अपने विद्रोही पुत्र चन्द्रगुप्त की सहायता करता है। उसे आजीवन अंधकूप का दण्ड देता है। बाद में वह चाणक्य एवं चन्द्रगुप्त की सहायता से बन्दीगृह से मुक्त होता है।

सिकन्दर का सहयोगी फिलिप्स है जो बाद में चलकर विजित भारतीय प्रदेशों का क्षत्रप बनाया जाता है। एनिसाक्रीटीज सिकन्दर का सहचर है। साइ-बर्टियस एवं मेगास्थनीज सिल्यूकस के दूत हैं। देवबल, नागदत्त एवं गणमुख्य ये मालव गणतंत्र के पदाधिकारी हैं।

कार्नेलिया यवन सेनापति सिल्यूकस की पुत्री है। वह यवन बालिका है फिर भी वह सिर से पैर तक आर्य संस्कृति में पगी है। वह भावुक और सहृदय है। भारत-भूमि के प्रति उसका इतना आकर्षण है कि वह कहती है— "मुझे इस देश से जन्म-भूमि के समान स्नेह होता जा रहा है। यहाँ के श्यामल कुंज, घने जंगल, सरिताओं की माला पहने हुए शैल श्रेणी, हरी-भरी वर्षा, गर्मी की चाँदनी, शीतकाल की धूप और भोले कृषक तथा सरल कृषक बालाएँ, बाल्यकाल की सुनी हुई कहानियों की जीवित प्रतिमाएँ हैं।" इसने आदर्श, भारतीय नारी की लज्जा एवं शालीनता का निर्वाह किया है।

अलका गांधार नरेश की पुत्री है (एवं आम्भीक) की बहन है। वह राष्ट्रप्रेमिका, साहसी, दयालु एवं

एवं चतुर राजकुमारी है। देश की स्वतंत्रता एवं जन-कल्याण की भावना से भरकर वह अनेक कष्ट सहते हुए उचित कार्य करती है। मालविका सिन्धु देश की कुमारी है जो और प्रदेशों को देखने की इच्छा से भ्रमण करने निकलती है। गांधार में अलका से मिलने पर उसे अलका से ऐसा स्नेह हो जाता है कि वह वहीं उसके साथ रहने लगती है। कल्याणी मगध सम्राट नन्द की कन्या है। उसमें आत्मसम्मान, स्वावलंबन, दृढ़ता, वीरता और साहस की भावनाओं का सुन्दर स्फुरण दृष्टिगत होता है। सुवासिनी मगध के जन-प्रिय अमात्य शकटार की कन्या है। किशोरावस्था में वह चाणक्य के प्रति आकृष्ट हुई थी, किन्तु युवावस्था में वह अमात्य राक्षस की अनुरक्ता है। नीला एवं लीला कल्याणी की सहेलियाँ हैं तथा एलिस कार्नेलिया की। इनमें अच्छी सहेलियों के गुण मौजूद हैं। ये गौण-पात्रों के रूप में नाटक में आयी है।

भारतीय संस्कृति की उत्कृष्टता सिद्ध करते हुए अखण्ड राष्ट्रीयता का शिलान्यास तथा साम्राज्य की आदर्श कल्पना चन्द्रगुप्त का उद्देश्य है। इस नाटक में भारतीयों के हृदय में आपसी वैमनस्य से रहित अनन्य देशभक्ति जिसका एक छोर विश्व-बन्धुत्व को छूता है, को जागरित करना अपना उद्देश्य रखा है।